लोक तथा परंपरा की कड़ी हैं माता सीता

परिसंवाद

दरभंगा | एक प्रतिनिधि

मैथिली के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ अमलेन्दु शेखर पाठक ने कहा कि मैथिली में सीता साहित्य के व्यापक सर्जन की आवश्यकता है। उन्होंने मैथिली के प्रख्यात साहित्यकार डा. हंसराज के उस कथन को स्मरण किया जिसमें उन्होंने कहा है कि यदि विद्यापति ने राधा -कृष्ण के बदले सीताराम को अपने काव्य-सर्जन का आधार बनाया होता तो आज मैथिली की स्थिति भिन्न होती। डा. पाठक मंगलवार को साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित परिसंवाद में बोल रहे थे। दरभंगा से सहभागी डा. पाठक सीता का राष्ट्रीय-सामाजिक एकता का आधार बताते हुए 'मैथिली प्रबंध काव्यमे सीता' विषय पर विचार रख हुए कहा कि मैथिली में प्रबंध काव्य की परंपरा का श्री गणेश कवीश्वर चंदा झा ने ‍‍‍ मिथिला भाषा रामायण की रचना के साथ किया, किंतु इसमें राम के चरित्त का बखान ही प्रमुख रहा। सीता-चरित अवश्य आया, किंतु राम ही प्रमुख रहे। इनके पश्चात कविवर लालदास ने रमेश्वर चरित मिथिला रामायण की रचना कर सीता को प्रमुखता दी। उन्होंने इसेमें अतिरिक्त पुष्कर कांड जोड़कर इसे शक्ति प्रधान बना दिया। उन्होंने जानकी रामायण भी लिखा। रामकथा का आश्रय लेकर विश्वनाथ झा,विषपायी ने रामसुयश सागर में सीता की महत्ता रेखांकित की। वहीं सर्वप्रथम कविवर सीताराम झा ने अंबचरित महाकाव्य लिखकर शिवधनु उठानेवाली सीता की सर्वश्रेष्ठता संस्थापित की। अकादेमी से पुरस्कृत 49 सर्ग के विशालकाय महाकाव्य 'सीतायन' के साथ ही जयकांत झा श्रुतधर के सीतायन, मैथिलीपुत्र प्रदीप का सीतावतरण, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पुस्तक सीता, हीरालाल झा हेम के सीता चरितामृत, बैजू मिश्र देहाती के मैथिली रामायण, पद्मश्री डा. उषाकिरण खान के जाइसँ पहिने आदि के साथ शंभुनाथ झा तथा डा. चंद्रमणि के सीता-शतकपर विस्तार से प्रकाश डाला।

मधुबनी से सहभागी डा. अरुण कुमार ठाकुर ने 'मैथिली मुक्तक काव्यमे सीता' पर विचार रखते हुए कहा कि मैथिली की कविताओं व गीत में सीता की महिमा का गुण-गान किया गया है। उन्होंने स्नेहलता, आचार्य सुरेंद्र झा सुमन, चंद्रभानु सिंह, मैथिलीपुत्र प्रदीप, डा. भीमनाथ झा आदि की रचनाओं का उद्धरण भी रखा। उन्होंने डा. अमलेन्दु शेखर पाठक के संपादन में प्रकाशित चार जानकी विशेषांकों की चर्चा करते हुए कहा कि सीता साहित्य का लेखन जारी रहने का यह प्रमाण है।

डा. तारानंद वियोगी की अध्यक्षता में हुए इस सत्र में वाराणसी से शिरकत करते हुए डा. वंदना झा ने मैथिली पारंपरिक आ लोकगीतमे सीता विषय पर कहा कि मैथिल ललना कभी भी अपने को सीता से अलग नहीं पाती हैं। विवाह के समय लोकगीतों में तो उनका स्मरण होता ही होता है। लोक तथा परंपरा के बीच की कड़ी हैं सीता। उन्होंने कई समदाउन गीत रखते हुए कहा कि एक तरफ इसमें करुणा का अजस्त्र प्रवाह है जो किसी की भी आंखों से आंसू बहा देती हैं तो दूसरी ओर स्त्री जीवन की जड़ उखड़ कर दूसरी जगह सृजनात्मकता के साथ स्थापित होने का भी परिचय देती है। इसका प्रमाण स्वयं सीता हैं जो सर्वदा कल्याण-कामना से युक्त रहीं। इससे पूर्व उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी में मैथिली के प्रतिनिधि डा. अशोक अविचल ने जमशेदपुर से सहभागिता करते हुए विषय-प्रवर्तन किया। वहीं बीज-भाषण पटना से मैथिली के चर्चित समीक्षा डा. रामानंद झा रमण ने किया। इस सत्र की अध्यक्षता सहरसा से डा. ललितेश्वरने की। दिल्ली से साहित्य अकादेमी के उप सचिव डा. एन. सुरेश बाबु के स्वागत एवं संचालन में हुए इस परिसंवाद का समापन उनके आभार से हुआ।